**International Journal of Advanced Research and Development**
**ISSN: 2455-4030**
**Impact Factor: RJIF 5.24**
**www.advancedjournal.com**
**Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 592-595**

# निराला की प्रयोगशीलता

**राघवेन्द्र प्रताप सिंह**
शोधार्थी, हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

**प्रस्तावना**

छायावाद में 'नव', या 'नूतन' के प्रति अभूतपूर्व ललक है, यह ललक निराला काव्य में भी जगह-जगह मिलती है। निराला की रचनाशीलता के सामने दो चुनौतियां थीं, एक तो खड़ी बोली के विकास की, दूसरे उसको नयी काव्यभाषा के रूप में प्रस्तुत करने की। रूपगत विविधता और प्रयोगशीलता से संपन्न रचनाएँ निराला के साहित्य में हमें शुरू से ही इसी वजह से मिलती हैं। निराला ने अपने लेखों में भाषा और साहित्य के उच्च स्तर से प्रेरणा ले कर हिंदी भाषा और साहित्य को भी उसी स्तर तक या उससे भी आगे ले जाने की रचनात्मक कोशिश की। वे बंगला के लगभग सभी बड़े लेखकों और बुद्धिजीवियों के ज्ञान और कर्म के उदाहरण अपने गद्य-लेखन में देते हुए यही तड़प प्रदर्शित करते हैं कि हिंदी भाषा और साहित्य भी उच्च कोटि का हो जाये। इसके लिए वे स्मृति, सत्ता और भविष्य (यानी अतीत, वर्तमान और आगे के विचार और ज्ञान) के भंडार में से रत्न चुनने और अपने काव्य में पिरोने में कतई संकोच नहीं करते थे। वे अन्य भाषाओं से शब्द लेकर अपनी कविता में नये प्रयोग करते थे, इसी तरह के प्रयोग लय, छंद, अलंकार आदि के भी करते थे और इस तरह अपनी कविता में नयापन लाने की कोशिश करते थे। 'वीणावादिनि वर दे' का वाचक सरस्वती से यही वरदान मांगता है

नव गति नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ नव जलद-मंद्र रव
नव नभ के नव विहग वृंद को
नव पर नव स्वर दे।

'नव स्वर' की इस चाह के ही कारण निराला के काव्य में प्रयोगशीलता की विविध धाराएं देखने को मिलती हैं। इस बारे में दूधनाथ सिंह ने ठीक ही कहा है कि 'अपने समकालीनों में निराला ही एक ऐसे कवि हैं, जिनके विराट, सर्वग्रासी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व में काव्य रचना प्रक्रिया के अनेक स्तर हर समय साथ-साथ क्रियाशील रहे हैं।' (निराला: आत्महंता आस्था, पृ.15) दुधनाथ सिंह ने उदाहरण देकर यह स्पष्ट किया है कि भाषा, संवदेना और काव्य उपकरणों के प्रयोगों में विविधता उनकी शुरू से लेकर अंत तक की कविताओं में मिलती है। उनके पहले कविता-संग्रह में ही विविधता की यह बानगी मिल जाएगी, भाषा में पुराने और नये प्रयोग, काव्यरूपों (जैसे गीत, लंबी कविता, मुक्तछंद काव्य) के पुराने और नये प्रयोग पहले संकलन 'अनामिका' से लेकर अंतिम संकलन 'सांध्यकाकली' तक में मिलेंगे। 'नव स्वर' की यह तलाश निराला ने अपने पूरे काव्य-जीवन में जारी रखी।

प्रयोगशीलता की दृष्टि से निराला हिंदी काव्य-जगत में बेजोड़ माने जा सकते हैं। अपनी इस प्रवृत्ति का उद्घाटन करते हुए इन्होंने स्वयं लिखा है कि मैंने 'भाव, भाषा और छंद की उलटी गंगा बहाई है।' इनकी प्रयोगशीलता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है, काव्य-विषय संबंधि प्रयोगशीलता। इस दृष्टि से इन्होंने छायावाद के बंधन को पूरी तरह अस्वीकार कर अपनी स्वछंद छायावादी रचनाओं के साथ 'राम की शक्तिपुजा', 'तुलसीदास', 'सरस्वती वंदना' आदि ऐतिहासिक पौरोणिक रचनाओं में वे छायावाद को उत्कर्ष प्रदान करते हैं। लेकिन अपनी गद्यात्मक रचनाओं में कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा, चतुरी चमार आदि के साथ ही कतिवा के क्षेत्र में 'वह तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक', 'रानी और कानी', 'गरम पकौड़ी', 'खजोहरा', 'चरखा चला', 'कुत्ता भोंकने लगा', 'डिप्टी साहब आए', 'छलांग मारता चला गया', 'झींगुर डंटकर बोला', 'महंगू महंगा रहा', 'टूटी बांह जवाहर की' आदि ऐसे विषय हैं जो अन्य छायावादी कवियों के लिए अकल्पनीय रहे हैं। मानव जीवन के, विशेषकर अपने युग जीवन के किसी भी पहलू को इन्होंने कविता के क्षेत्र में वर्जित नहीं माना। अपनी इन कविताओं और अन्य बहुत सी कविताओं के माध्यम से निराला ने अपने युग की राजनीति, प्रशासनिक व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, सामंतीय शोषण पर आधारित व्यवस्था में खुलकर हस्तक्षेप किया। उनकी कविता की यह धार अन्य छायावादी कवियों में प्राय: नहीं मिलेगी। इस प्रकार की सारी विशेषताएं निराला में उनकी प्रयोग धर्मिता के कारण ही आयी हैं।

निराला ने अपनी प्रारंभिक कविताओं में ही मुक्ति की चेतना को प्रतिबिंवित किया था। यह चेतना 'बंधनमय छंदों' से मुक्ति की चाह के रूप में भी परिलक्षित होती थी। अपनी इस चाह को उन्होंने 'प्रगल्भ प्रेम' कविता में यो कहा भी था

आज नहीं है मुझे और कुछ चाह
अर्धविकच इस हृदय में आ तू
प्रिये छोड़कर बंधनमय छंदों की छोटी राह

अपनी इस आकांक्षा को निराला ने पहले काव्य-संग्रह की एक कविता 'जुही की कली' में भी एक नये प्रयोग की तरह फलीभूत किया था। 'जूही की कली' में हमें जो नया स्वछंद छं प्रयोग दिखायी देता है, उसमें पुराने और नये का मेल किया गया है। उसकी लय में कवित्व का गुण है, लेकिन झलक मात्र के लिए। पहला खंड स्वच्छंद है, लेकिन भाषा में अनुप्रास का खूब प्रयोग है, 'विजन-वन-वल्लरी', 'स्नेह-स्वप्न-मग्न', 'विरह-विधुर', 'दूर देश'। दूसरे खंड में 'आई याद' के साथ तुकांत पंक्तियां हैं, फिर स्वच्छंद पंक्तियां है और उसके बाद फिर चार पंक्तियां तुकांत हैं, और तदुपरांत कविता के अंत तक स्वच्छद रचना है। यह एकदम नया प्रयोग था यह कवित 1916 में लिखी गयी थी और उस समय के बीच देखें तो इस अभिनव प्रयोग था। यह कविता 1916 में लिखी गयी थी और उस समय के बीच देखें तो इस अभिनव प्रयोग की महत्ता समझ में आ सकती है। भाषा के स्तर पर देखें तो 'जुहीं की कली' में संस्कृतनिष्ठ भाषा है तो बोलचाल की भाषा का भी मिश्रण है। इस कतिवा में क्रम इस तरह रखा है कि पहले संस्कृतनिष्ठ, फिर बोलचाल की भाषा फिर संस्कृतनिष्ठ, फिर बोलचाल की भाषा। इसी कालखंड में लिखी 'अध्यात्मक फल' शीर्षक कविता में एक ही साथ भाषा और छंद के एकदम नये प्रयोग हैं

जब कड़ी मारें पड़ी, दिल हिल गया
पर कभी चूं भी न कर पाया यहां
मुक्ति को तब युक्ति से मिल खिल गया।
भाव जिसका चाव है छाया वहाँ

पूरी कविता को इसी पैटर्न पर लिखा गया है। इस पैर्टन में हर पंक्ति के बीच में दो तुकें है। जैसे पहली पंक्ति मे 'कड़ी' और 'पड़ी', दूसरी पंक्ति में 'कभी', 'चूं भी', तीसरी पंक्ति में 'मुक्ति' और 'युक्ति', चौथी पंक्ति में 'भाव' और 'चाव'। इसके बाद अंग्रेजी के 'सानेट' काव्यरूप की तरह पंक्ति की आखिरी तुकें नये तरीके से सजायी हैं, पहली पंक्ति की तुक तीसरी से मिलती है और दूसरी पंक्ति की तुक चौथी पंक्ति से। 'दिल हिल गया' की तुक 'मिल खिल गया' से और 'पाया यहां' की तुक 'छाया वहां' से मिलती है। हिंदी में यह अभिनव प्रयोग था। इस पैटर्न को कविता के पांचों चौपदों में निभया है।
'जागो फिर एक बार" के दोनों खंड भी स्वछंद छंद में लिखे हैं जैसाकि दूसरे खंड के अंत में एक पंक्ति भी आती है, 'मुक्त हो सदा तुम/बाधा विहीन बंध छंद ज्यों'। लेकिन 'राम की शक्तिपूजा' में अंग्रेजी के 'हीरोइक कपलेट' जिसका प्रयोग अठारहवीं सदी के सभी कवियों ने इंग्लैंड में किया था और जिसमें अलेग्जैंडर पोप और ड्रायडन ने अपने व्यंग्य महाकाव्य लिखे थे को हिंदी में सबसे पहले निराला ने इस्तेमाल किया। यह भी अभिनव प्रयोग था। लेकिन 'बादल राग' की कविताओं में फिर स्वछंद छदं का प्रयोग मिलोग। बादल की स्वच्छंद वृत्ति के अनुकूल छंद का भी इस्तेमाल हुआ है। वाचक बादल को संबोधित करते हुए कहता है

ऐ निर्बंध!
अंध-तम-अगम- अनर्गल-बादल!
ऐ स्वच्छंद!
मंद-चंचल-समीर-रथ पर उच्छृंखल!
ऐ उद्दाम!
अपार कामनों के प्राण!
बाधारहित विराट्!

निराला के काव्य में प्रयोगशीलता को हिंदी आलोचकों ने कई कोणों से देखा और परखा है। डॉ. रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक "निरालाा की साहित्य साधन-द्वितीय खंड" में "कला" शीर्षक उपखंड में निराला की कविता के शिल्प संबंधी प्रयोगों की विस्तारसे चर्चा की है। अन्य आलोचकों ने सुविधा के लिए निराला की कविताओं का वर्गीकरण करके उनमें प्रयोगशीलता को रेखांकित किया है। पद्मसिंह शर्मा "कमलेश" ने निराला के संपूर्ण को कुछ रूपगत विशेषताओं के आधार पर चार श्रेणियों में बाँटा है

1. गीत
2. प्रगीत
3. आख्यानक काव्य
4. गीति नाट्य

उन्होंने विस्तार से इन श्रेणियों को व्याख्यायित करके निराला काव्य में रूपगत प्रयोशीलता को रेखांकित किया है। (देखें, लोकभारती मूल्यांकन माला के तहत प्रकाशित "निराला", संपादक, इंद्रनाथ मदान, पृ. 152) दूधनाथ सिंह ने रूप और अंतर्वस्तु दोनों के आधार पर निराला के संपूर्ण काव्यको छः श्रेणियों में विभाजित किया है, अंतः संगीत की रचनाएँ, लंबी कथानात्मक कविताएं, राष्ट्रीय उद्बोधन की कविताएं, काव्य अभिजात्य से मुक्तिप्रयास की रचनाएँ, ऋतु प्रार्थनाएं और प्राप्ति की कविताएँ। दूधनाथ सिंह का वर्गीकरण और उनका विवचेन निराला काव्य में प्रयोगशीलता के विविध आयामों को समझने में काफी मददगार साबित होता है। उनकी कमी सिर्फ यही है कि हिंदी आलोचना की उस आम प्रवृत्ति से वे भी नहीं बच पाये हैं जो रचनाको रचनात्मक के निजी जीवन से पैबंद की तरह जोड़ती चलती है। आलोचनाका इस तरह का विमर्श बहुत पहले पीछे छूट जाना चाहिए था, मगर यह कमी चली आ रही है। दूसरी कमी यह भी है कि किसी न किसी दूसरे बड़े रचनाकार को हेटा सिद्ध करके अपने इष्ट रचनाकार को शीर्षस्थान देने की कोशिश की जाती है। डॉ. दूधनाथ

सिंह ने यह ज्यादती रवीन्द्रनाथ ठाकुर के साथ कर दी है और निराला के अंत:संगीत को कहीं अधिक "महानता" प्रदान की है जिसकी कतई जरूरत नहीं थी। वे लिखते हैं : "रवींद्रनाथ से उनकी महानता रवींद्रनाथ से ठीक प्रतिकूल होने में है, उनके समान दिखने में नहीं।" हिंदी आलोचना की यह कौन-सी मजबूरी है कि एक रचनाकार की प्रयोगशीलता को महान सिद्ध करने के लिए किसी अन्य रचनाकार को हेटा सिद्ध किया ही जाये? यह प्रवृत्ति आज भी जगह-जगह हिंदी आचोचना में देखने को मिल जाती है। कहीं ऐसा तो नही कि चेतना में सदियों पुरानी जड़ जमाये बैठी सामंती मूल्य व्यवस्था जनित "असमानता" की भावना ही ऐसा करने के लिए प्रेरित करती हो। कहीं हम एक को "राजा" और दूसरे को "रंक" सिद्ध करने की ही कोशिश तो नहीं कर रहे होते हैं?

निराला के गीतों की अंतर्वस्तु में प्रयोशीलता के जो आयाम ऊपर गिनाये गये हैं, उन पर थोड़ा दृष्टिगत कर लें। पहले "जीवन" कोही लें, पराधीन भारत में आवाम का जीवन कोई जीवन नहीं था, यह अहसास हर संवेदशीन रचनाकार को व्यथित कर रहा था। इसलिए जीवन को आकांक्ष, एक स्वाधीन और मानवीय जीवन जीने की चाह को निराला ने अपने गीतों में अभिव्यक्ति दी। स्वाधीन जीवन तभी संभव है जब पराधिनता की रात में मुंदी हुई आंखे खोली जायें, तभी जीवन में बहार आ सकती है

प्रिय, मुद्रित दृग खोलो।
गत स्वप्न-निशा का तिमिर जाल
नव किरणों से घो लो।
जीवन-प्रसून वह वृंतहीन
.....
खुल गया उष-नभ में नवीन

निराला ने "प्रेम" की शाश्वत थीम को भी जब अपने गीतों में पिरोया तो उनमें प्रयोगशीलता के नये आयाम जोड़े। निराला की इस प्रयोगशीलता या मौलिक सर्जना के बारे में दूधनाथ सिंह ने लिखा है कि "इस मौलिक सर्जना की पृष्ठभूमि में निराला की प्रेमसंबधी निजी और महत्वपूर्ण धारणा है। प्रेम उनके लिए वह महान तत्वहै जो उन्हें भारयुक्त न करके भारमुक्त करता है। उन्हें पूर्ण बनाता है। व्यक्तिगत के भीतर जो खोखले, अंधेरे कोटर हैं उन्हें भरता है और आलोक फैलाता है। पूर्णता की अनुभूति ही उनके प्रेमगीतों में बार-बार अभिव्यक्ति हुई है।" जैसा कि कहा जा चुका है हिंदी आलोचक निराला की हर कविता को उनके "निजी" जीवन या "व्यक्तित्व" से जोड़ देते हैं, इसलिए उनके प्रेमगीतों को भी "लिरिकल" यानी निजी संवेगों की अभिव्यक्ति करार देते हैं तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं। हिंदी गीतों की महान परंपरा कभी "लिरिकल" नहीं रही, वह अपने स्वरूप में हमेशा "नाटकीय" रही, चाहे वह विद्यापति के गीत हों या सूर के भ्रमरगीत, उनमें कवि "स्व" से ऊपर उठाकर एक वाचक की रचना करता है। निराला ने भी इसी परंपरा को विकसित किया। इसलिए दूधनाथ सिंह का यह कथन सही नहीं है कि निराला ने "अपने" से अपनी कविता को कभी भी अलगाया नहीं।" हर महान कवि को अपनी कविता को अपने से अलगानी पड़ता है और निराला ने भी यही किया।

ऋतुगीतों के अलावा निराला ने बहुत से प्रार्थनागीत भी रचे। इन गीतों के केंद्र में भी स्वाधीनता की चाह ही दिखायी देती है। "सरस्वती" के प्रति लिखे गये कई प्रार्थनागीत हैं जिनमें नये ज्ञान, नयी रचनाशीलता, नयी वाणी, नयी लय आदि की मांग है। भारती के बिंब में वे भारतमाता को भी देखते हैं, उसे शक्ति या दुर्गा या श्यामा का रूप भी देते हैं। ये एकदम नये प्रयोग हैं, राष्ट्रीयता के नये मूल्य को निराला ने इस तरह नयी बिंबात्मकता दी

भारति, जय विजय करे
कनक - शल्य - कदम धरे!
लंका पदतल - शतदल
गर्जितोर्मि सागर - जल
धोता शुचि चरण-युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे!

जिस तरह निराला ने गीत विधा को नये-नये प्रयोगों द्वारा एक ऊंचाई प्रदान की, उसी तरह उन्होंने लंबी कविताओं के भी नये-नये प्रयोग किये। इन लंबी कविताओं में शोकगीत, उद्बोधन कविताएं, आख्यानपरक कविता, नाट्यकविता आदि के प्रयोग मिलते हैं। "सरोज स्मृति" जैसा शोकगीत हो, या "छत्रपति शिवाजी का पत्र", "यमुना के प्रति", "जागो फिर एक बार" आदि जैसे उद्बोधन काव्य हों, या "राम की शक्तिपूजा", "तुलसीदास" जैसे आख्यानक काव्य हों, सभी नये प्रयोग हैं। इनमें निराला ने छंदों, भावों, काव्यभाषा के नये प्रसाधनों को इस्तेमाल करके अपनी प्रतिभा और प्रयोगशीलता का अद्भूत परिचय दिया है। "छत्रपति शिवाजी का पत्र" में जहां कविता छंद की लय वाला मुक्त छंद ईजाद किया है तो "यमुना के प्रति" में आल्हा की लय अपनायी है। अंग्रेजी के शोकगीत खासकर टामस ग्रे द्वारा लिखित, "एक गांव के श्मशान में लिखा शोकगीत" की लय को "सरोज स्मृति" में अपनाया है। "राम की शक्तिपूजा" में "हीरोइक कपलेट" की झलक है। इसी तरह उनकी इन रचनाओं मं जहां भारतीय परंपरा की अलंकारप्रियता है वहीं वाल्ट व्हिटमैन जैसी कैटालागिंग यानी विवरणात्मकता है जिससे उनकी इन लंबी कविताओं में आधुनिक महाकाव्यात्मकता का गुणआ जाता है। इसी तरह निराला काव्यभाषा का भी एक विस्तृत मैदान रचते हैं जिसमें भावोचित भाषा के प्रयोग मिलेंगे, कहीं अत्यंत गरिष्ठ और संस्कृतनिष्ट और कहीं एकदम बोलचाल की भाषा। अकेले "राम को शक्तिपूजा" को ही देखें तो पायेंगे कि युद्धवर्णन की भाषा में संस्कृतनिष्ठ समासयुक्त भाषा का प्रयोग है, मगर बाद में राम की मनोदशा के बदलने केसाथ भाषा को भी बदल दिया

गया है।

"कुकुरमुत्ता" और "नये पत्ते" की रचनाएँ निराला की प्रयोगशीलता की बेहतरीन मिसालें हैं। ये रचनाएँ नये यथार्थ की उन पर्तों को खोतली हैं जिन्हें उस दौर में समझना आसान नहीं था। इसके लिए जिस मुंहफट भाषा की दरकार थी, निराला ने उसी भाषा का इस्तेमाल किया

आजकल पंडित जी देश में विराजते हैं।
.....
बड़े बाप के बेटे
बीसियों भी पर्तों के अंदर, खुले हुए
एक एक पर्त बड़े-बड़े थातियाँ लिये हुए
राजों के बाजू पकड़, बाप की वकालत से
कुर्सी रखने वाले अनुलंघ्य विद्या से
देसी जनों के बीच
लेंड़ी जमींदारों की आंखों तले रखे हुए
मिलों के मुनाफे खाने वालों के अभिन्न मित्र
.....
विलायती राष्ट्र से समझौते के लिए
गले का चढ़ावा बोर्जुआजी का नहीं गया

पंडित जवाहरलाल नेहरू के माध्यम से राजसत्ता का यह वैज्ञानिक सार तत्व निराला की उक्त कविता में बड़े पैनेपन से आ गया है। ऐसे दौर में जब डांगेपंथी कम्युनिस्ट जवाहरलाल नेहरू को जनवादी मानकर समर्थन देने की कोशिश में लगे थे, निराला की यथार्थवादी दृष्टि यह सही ही बता रही थी कि नेहरू जी भारतीय बड़े पूंजीपतियों और बड़े भूस्वामियों के हितसाधक थे और विदेशी पूंजीपतियों के साथ भी समझौते को तत्पर थे। इस यर्थार्थ उद्घाटन के लिए उन्होंने "फ्रेंच" शब्द "बोर्जुआजी" जिसे मार्क्सवादी चिंतक पूंजीपतिवर्ग के लिए प्रयुक्त करते हैं का इस्तेमाल अपनी कविता में किया।

इस तरह हम देखते हैं कि निराला काव्य का विकास प्रयोगशीलता की तलक के साथ ही हुआ था। वे हिंदी साहित्य को बहुत समृद्ध और विश्व स्तर पर बनाना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने अपनी वैचारिक और सौंदर्यशास्त्रीय तैयारी करके वैविध्यपूर्व रचनाकर्म किया।

**संदर्भ**


1. राजे ने अपनी की, महाकवि 'निराला'
2. निराला आत्महंता आस्था
3. अनामिका
4. जूही की कली
5. तुलसीदास
6. राम की शक्तिपूजा
7. सरस्वती वंदना
8. मंहगू महंगा रहा
9. टूटी बांह जवाहर की
10. निराला की साहित्य साधना - द्वितीय खण्ड डॉ. रामविलास शर्मा
11. 'निराला' संपा.-इंद्रनाथ मदान, लोकभारती मूल्यांकन माला,
12. निराला: आत्महंता आस्था